International Journal of Education and Science Research Review
P-ISSN 2349-1817, E- ISSN 2348-6457
www.ijesrr.org June- 2017, Volume-4, Issue-3 Email- editor@ijesrr.org

स्वतंत्रता संघर्ष में क्रान्तिकारियों की भूमिका

श्रीमती आशा रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आर.के.एस.डी.पी.जी कालेज
कैथल

आज हम अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं। हम अपने निर्णय स्वयं ले सकते हैं और हमारा तिरंगा बड़ी शान से हवा में लहराता है। १९४७ से पहले ऐसा नहीं था। हम अंग्रेजों के गुलाम थे परन्तु आज दुनिया के बाकि देशों की भांति हम भी सिर उठा कर जी रहे हैं। परन्तु तनिक सोचिये, यह आजादी लाखों लोगों के बलिदान के कारण मिली जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य में अनेक प्रकार की यातनाएं सही। सलाखों के पीछे रहे। निमर्मता का नंगा नाच देखा और निडरता व बहादुरी का एक नमूना पेश करते हुए फांसी के फन्दे पर झूल गये। उनके दिल में एक ही हसरत थी, एक ही अरमान था कि हमारा देश आजाद हो और अन्ततः यह आजादी १५ अगस्त १९४७ को मिली।

लेकिन हमारे लिए बड़े दुर्भाग्य की बात है कि क्रान्तिकारी आन्दोलन को अंग्रेजों के साथ-२ भारतीय इतिहास में भी इस आन्दोलन को कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं मिला। इनको आतंकवादी नाम से संबोधित किया गया। बड़े दुख का विषय है कि हमारे देश के आजादी के नायक क्रान्तिकारियों को भुला दिया गया और उनके द्वारा दिए गए योगदान और बलिदान को भी इतिहास में लिपिबद्ध नहीं किया गया, जिससे हमारी आने वाली पीड़ियां प्रेरणा ले सकें।

हमारे देश का दुर्भाग्य देखिए कि भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, चन्द्रशेखर जैसे वीर क्रान्तिकारियों को स्वतंत्रता के बाद भी आतंकवादी, उग्रवादी कहकर पुकारा जाता था। आज भी हम २००२-२००३ की पुस्तक उठाकर देखते हैं तो उनमें इनको क्रान्तिकारी नहीं उग्रवादी कहकर संबोधित किया गया।

भारत के अजायबघर में अगर आज भी हम जायेंगे तो भगतसिंह का नाम आज भी क्रान्तिकारियों में शुमार नहीं है। इससे बड़ा इसदेश का दुर्भाग्य क्या होगा। हम इतिहास में क्या पढ़ते हैं। असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन और समाप्त। और हमारी इतिहास की किताबों पर इस क्रान्तिकारी आन्दोलन के बारे में बहुत कम जानकारी दी गई है।

भारत जब आजाद हुआ, उस समय केबिनेट मिशन में पैंथिक लोरंस भारत आए। उनके जो पी.ए. थे, उन्होंने एक पुस्तक की रचना की जैम सेंज कंले वि ठतपजपेी त्वसम वि प्दकपंण आज एक पुस्तक उपलब्ध और इसके कुछ महत्वपूर्ण प्रतियां एक विद्वान से मुझे भी प्राप्त हुई। उसमें साफ लिखा है कि कौन कहता है भारत को हमें आजादी कांग्रेस के इन कमजोर बूढ़ों से डर कर दी है। हम डरे हैं तो केवल क्रान्तिकारियों से। क्रान्तिकारी ही लोग थे जो हमें डरा सके, जिन्होंने हमारी नींव को हिला कर रख दिया था।

भारत का दुर्भाग्य देखिए, जितना नज़रअन्दाज भारत किया गया है, विश्व इतिहास में किसी भी देश ने अपने नायकों के साथ ऐसा नहीं किया है।

इंग्लैंड के लंदन में जो ब्यजल मूंनंस है वहां पर एक बहुत बड़ा सटैचु है। वह इंगलैंड का कोई प्राइम मिनिस्टर नहीं है, कोई किसी पार्टी का नेता नहीं है, ना तो वहां का राजा था। वो था एडमीलन नेलसन, उसने १८०५ में फ्रांस की नौ सेना को ध्वस्त कर दिया। १८०५ से १९४७ तक इंग्लैंड का वहां अपनी विश्व सत्ता कायम रखी। आप अमेरिका को देखिए, वहां स्टैच्यु आफ लिबर्टी के पास एक शहीद स्मारक काबड़ा बोर्ड लगा हुआ है जिस पर ५९ हजार व्यक्तियों का नाम लिखा हुआ है। वो ५९ हजार व्यक्ति कौन हैं? वो १९६५ से १९७३ तक वियतनाम बार में लड़े। अमेरिकी सरकार ने उन शहीदों के परिवारों की जिम्मेदारी ली। उनकी पत्नियों की, बच्चों की सुरक्षा का, जीविका का, कैरियर का जिम्मो लिया और उन परिवारों को अमेरिका में इतना सम्मान दिया जाता है कि पूछिये मत।

लेकिन एक हमारा देश है। जहां शहीदों के नाम पर कोई स्मारक नहीं है। कोई सड़क नहीं। उनके परिवारों को कोई जानता तक नहीं है। हमारे देश के शहीदों की सूची में केवल भगत सिंह,राजगुरू, सुखदेव, चन्द्रशेखर, सुभाष चन्द्र बोस ही नहीं हैं बल्कि हजारों की संख्या में ऐसे क्रान्तिकारी हैं जिन्हें फांसी की सजा दी गई। जिनको काले पानी की सजा सुनाई गई। काले पानी की जेल कोई साधारण जेल नहीं बल्कि वो जेल है जहां पर बन्दियों के साथ अमानूषिक अत्याचार किए जाते हैं। उस जेल में १२ फुट के कमरे में ४० लोग रहते थे। जहां कोई न तो बाथरूम था। वहीं पर पेशाब करने के लिए एक पीपा रखा जाता था जिसे अगर वो बाहर आ जाता था तो वो उनके बिस्तर के नीचे आ जाता था। जब वो सुबह उठते तो कोल्हू के बैल की जगह जोता जाता था। एक बार वीर-सावरकर को तेज बुखार था। उसने हल जोतने से मना कर दिया तो उसको सन बांटने के लिए दिए गए जिसके कारण उसके हाथों में छाले पड़ गए। वीर सावरकर एक ऐसा व्यक्ति था जिसे एक ही जीवन में दो बार उम्र कैद की सजा सुनाई गई। और हमारे इतिहास में हम उनके बारे में कितना पढ़ते हैं- एक लाईन भी नहीं।

जब भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई तो वीर सावरकर जैसे आजादी के नायक के साथ क्या हुआ। इनको महात्मा गांधी के हत्या के आरोप में जेल में डाल दिया। हम यहां बात करेंगे भड़केश्वर दत की जिन्होंने भगत सिंह के साथ असेम्बली में बम फैंका था और उनको उम्र कैद की सजा सुनाई गई थी। आजादी के बाद उनको ना तो किसी सम्मान से सम्मानित किया गया, ना उनको वो सम्मान दिया जिसके वो अधिकारी थे। और सन् १९६४ में दिल्ली के खादी आश्रम में उनकी मृत्यु हो गई। ऐसा हुआ हमारे देश के नायकों के साथ।

अब बात करते हैं हम भारत में क्रान्तिकारी गतिविधियों की कि किस प्रकार से भारत में क्रान्ति का आगाज हुआ और १९४७ में वो अपने अंजाम तक पहुंचा।

भारत में क्रान्तिकारियों की गतिविधियांः-

क्रान्तिकारियों की गतिविधियां बेशक भारत के अनेक क्षेत्रों में फैली परन्तु इनके प्रमुख केन्द्र महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब, मद्रास (चेन्नई) और दिल्ली थे। सबसे पहले हम बात करेंगे महाराष्ट्र के बारे में।

महाराष्ट्रः- भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महाराष्ट्र के क्रान्तिकारियों ने बहुत प्रशंसनीय योगदान दिया। वास्तव में क्रान्तिकारियों की कार्यवाहियों का सिलसिला यहां से प्रारंभ हुआ था। १८९७ ई. में दो चापेकर भाइयों (दामोदर हरि चापेकर तथा बालकृष्ण चापेकर) ने अंग्रेजी राज्य से ठक्कर लेने के लिए हाथों में बंदूकें पकड़ी। उन्होंने दो निर्दयी अंग्रेज अधिकारियों मिस्टर रैंड तथा लैफटीनेंट आपरिक्ट को गोलियां मार कर यमलोग पहुंचा दिया। सरकार ने इन दोनों भाईयों को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया। इसप्रकार इन वीर सपूतों ने अपनी शहीदी देकर भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। शीघ्र ही महाराष्ट्र में कई गुप्त संस्थाओं की स्थापना हुई। इनमें से १९०४ में बी.डी. सावरकर द्वारा स्थापित की गई 'अभिनव भारत समाज' सर्वप्रसिद्ध हुई।

इसने महाराष्ट्र में क्रान्ति का एक अलक साजगा दिया जिसके कारण महाराष्ट्र में क्रान्तिकारी गतिविधियों ने जोर पकड़ लिया और अनेक क्रान्तिकारी शहीद हुए।

बंगालः-

बंगाल की भूमि को क्रान्तिकारी भूमि कहा जाता है। भारत के इस प्रान्त में अनेक क्रान्तिकारी उपलब्ध हुए जिन्होंने अपनी क्रान्तिकारी कार्यवाहियों के साथ ब्रिटिश सरकार की नाक में दम कर दिया।

बंगाल में क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार करने के लिए कई गुप्त संस्थानों की स्थापना की गई थी। इसमें से अनुशीलन समिति नाम की संस्था सर्वाधिक प्रसिद्ध थी। इसकी समस्त बंगाल में ५०० शाखएं थी। इस समिति का प्रमुख केन्द्र कलकता तथा ढाका थे। इन समितियों ने न केवल क्रान्तिकारियों को हथियारों का प्रयोग करने की ही शिक्षा दी बल्कि कई स्थानों पर बम तैयार करने के कारखाने भी लगाये। इसके अतिरिक्त क्रान्तिकारियों ने 'युगान्तर', 'नवशक्ति', 'संघय' एवं न्यू इण्डिया नाम के समाचार पत्रों के माध्यम से अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाया।

दिसम्बर १९०७ में बंगाल के लेफटीनेंट गवर्नर एड्रथ क्रेजट के कत्ल के उद्देश्य से उस रेलगाड़ी पटरी से उतर गयी परन्तु लेफटीनेंट गवर्नर बाल बाल बच गया। १९०८ ई. में प्रफुल्ल चाकी तथा खुदी राम बोस ने मुजफमरपुर के बदनाम जज किंग्स फोर्ड को कत्ल करने के लिए उसकी बग्गी पर बम फैंका। सौभाग्य से वह उस समय बग्गी में नहीं था। परन्तु उसके सीान पर दो अंग्रेजों ने गिरफतार करके फांसी का दण्ड दिया। इस घटना के पश्चात् पुलिस ने बंगाल में कई स्थानों पर क्रान्तिकारियों के अड्डों पर छापे मारे। इन छापों के दौरान सरकारी गवाह बनने वालों में रिन गोस्वामी तथा सरकारी वकील मिस्टर आशुतोष को क्रान्तिकारियों ने गोलियों से उड़ा दिया। क्रान्तिकारियों को गिरफतार करने वाले डिप्टी सुपरीटेंडेंट पुलिस सगसूल आलम को क्रान्तिकारियों ने १९१० ई में कलकता हाई कोर्ट के आंगन में कत्ल कर दिया।

पंजाबः-

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पंजाब के क्रान्तिकारियों को विशेष स्थान प्राप्त है। अंग्रेजी प्रशासन विरोधी कड़ा प्रचार करने के उद्देश्य से १९०७ ई. में सरदार अजीत सिंह जो सरदार भगत सिंह के चाचा थे, ने 'भारत माता सोसायटी' की स्थापना की। इस सभाके अन्यमुख्य सदस्यों के नाम सूफी अम्बा प्रसाद, लाल चन्द फलक, लाला पिण्डी दास, दीन दयाल बांके, सरदारकिशन सिंह तथा सरदार स्वर्ण सिंह थे। इन क्रान्तिकारियों ने बंगाल के गुप्त संगठनों के साथ अपने सम्बन्धस्थापित किएं पंजाब के किसान पहले ही अंग्रेजी सरकार द्वारा अपनाई गई किसान विरोधी नीतियों के कारण उसके विरोधी थे। १९०७ ई. में उसके द्वारा पास किए गए कैनाल कालोनाजेशन बिल ने आग में घी डालने का काम किया। फलस्वरूप पंजाब के किसान भड़क उठे। ऐसे समय में पंजाब में लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह ने अपने धुंआधार भाषणों क्षरालोगों में एक नया जोश भरा। परिणामस्वरूप लाहौरे तथा रावलपिंडी में दंगे भड़क उठे। सरकार ने लाला लाजपत राय तथा सरदार अजीत सिंह को गिरफतार करके बर्मा के कारावासों में भेज दिया। इन नेताओं की गिरफतारी के कारण पंजाब के लोगों का क्रोध और भी बढ़ गया। परिस्थितियों को नियन्त्रित करने के लिए सरकार ने नवम्बर १९०७ ई. को इन दोनों नेताओं को रिहा करदिया। जुलाई १९०९ ई. में पंजाब के प्रमुख क्रान्तिकारी मदन लाल ढींगरा ने लन्दन में विलियम कर्जन वाइली को गोलियों से

उड़ा कर उसके द्वारा भारत में किए गये अत्याचारों का बदला लिया। इस वीर सपूत ने अपनी गिरफतारी स्वयं दी। वह हंसतं हंसते अगस्त १९०९ ई. को फांसी के फन्दे पर झूल गया। उसके बलिदान ने भारत वासियों के हृदयों पर अगरा प्रभाव छोड़ा।

मद्रासः-

मद्रास (चेन्नई) में चिदम्बरन पिल्लै, जो विपिन चन्द्र पाल के भाषणों से बहुत प्रभावित हुआ था, ने तिनेवेली में अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध बहुत भड़कीले भाषण दिए। इससे उत्तेजित होकर लोगों ने वहां दंगे कर दिए तथा कइ सरकारी इमारतों को जला दिया। स्थिति पर नियन्त्रण पाने के लिए पुलिस ने लोगों पर गोली चला दी, जिस कारण कई लोग मारे गये तथा घायल हुए। आशे जिसने पुलिस को वहां गोली चलाने का निर्देश दिया था, को जून १९११ ई. में एक क्रान्तिकारी वांची अय्यर ने यमलोक पहुंचा दिया। पुलिस के हाथ पड़ने की अपेक्षा वांची ने स्वयं को गोली मार ली। दिल्ली में २३ दिसम्बर २०१२ ई. को वायराय लॉर्ड हार्डिंग पर जब वह एक जुलूस के साथ दिल्ली में प्रविष्ट होरहा था तो उस पर एक बम फैंका गया। बम फटने के कारण वह घायल हो गया तथा उसका एक अंगरक्षक मारा गया।

दिल्लीः-

बसन्त कुमार- २३ दिसम्बर १९१२ को वायसराय पर बम फेंके। ११ मई १९१५ को अम्बाला जेल में फांसी दी गई। इससे पहले कई बार बम फैंके।

भाई बाल मुकन्द- २३ दिसम्बर१९१२ में वायराय होर्डिंग पर दिल्ली में बम फैंका। महान क्रान्तिकारी भाई परमानंद के चचेरे भाई थी। भाई मतिदास इनके पूर्वज थे। ११ मई १९१४ को इन्हें फांसी दी गई। इनकी पत्नी रखी ने भी उस दिन उसी वक्त प्राण त्यागे।

मास्टर अमीर चन्द- आकाश अखबार के सम्पादक गदर नेता हरदयाल के शिष्य थे। २३ दिसम्बर १९१२ वायसराय पर बम फैंका। इनके पिता लाहौर में सैशन जज थे। दिल्ली के धनाढ्य परिवार से सैंटस्टीफर से बी.ए. पास की। ८ मई १९१५ को दिल्ली सैन्ट्रल जेल में इन्हें फांसी दी गई।

गुरदासमल- ५२ मुकदमे झूठे बनाए गए। उत्तर पश्चिमी प्रान्त के बहुत बड़े जमींदार थे। तीन पुत्र थे। तीनों ही क्रान्तिकारी थे। पंजाब के गवर्नर जाफरी पर गोली चलाई। निशाना चूक गया। पिता ने कहा कि मैंने तुम्हें बड़ा अच्छा निशाना सिखाया था। तुम चूक कैसे गये?

खुशीराम- १९१९ को लाहौर की बादशाही मस्जिद में रोल्ट एक्ट के विरोध में एक विशाल जनसभा हुई। हजारों हिन्दू मुसलमान पहुंचे। हीरा मण्डी चौक पर तिरंग लहराया जायेगा। खुशी राम ने जलूस का नेतृत्व किया। हजारों की संख्या में लोग मारे गये। पुलिस अधिकारी मोहम्मद अली ने रोका। पर जलूस नहीं रूका। खुशी ने तिरंगा आगे किया। इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया। तभी गोलियां चलनी शुरू हो गई। सात गोलियां खुशी राम को लगी। लेकिन गिरने से पहले ही उसने तिरंगा निश्चित स्थान पर लहरा दिया। वन्दे मातरम उद्घोष कर वहीं ढेर हो गया। उस समय खुशी राम की उम्र १८ वर्ष थी। खुशी राम की शव यात्रा में ५ हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए। इतिहास में इतनी बड़ी शव यात्रा कभी नहीं हुई।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कहेंगे कि जितना अनदेखा भारत ने अपने क्रान्तिकारियों को किया गया है, उतना अन्य किसी भीदेश ने नहीं किया। ना इनको मान मिला ना सम्मान मिला और ना इतिहास में वो दर्जा प्राप्त हुआ जिसके वो हकदार थे।

दुर्गा भाभी जैसी वीरांगना ने देश की आजादी के बाद गुमनामी का जीवन जीया। हम यहां ये कहेंगे कि जिन लोगों ने देश के लिए इतना किया, उन लोगों के साथ ऐसा तो नहीं करना चाहिए कि उनकी सराहना भी ना हो।

हम शुक्रिया करते हैं ऐसे सम्मेलनों का जहां पर ऐसे विषय रखे जाते हैं और इनके माध्यम से हम अपने विचार भी रखते हैं और क्रान्तिकारियों के बारे में हमारी जानकारी और बढ़ती है।

संदर्भ सूची

1. 'ताराचंद' (१९८४), भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहासः सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
2. 'जौहर' के एल (२००७) 'शहीद भगत सिंह, एक नजदीकी दृष्टिकोण' स्नेह प्रकाशनः ५२१-एल, मॉडल टाउन यमुनानगर (हरियाणा)-१३५००१
3. 'त्रिपाठी' वचनेश (१९९७) 'जरा याद करो कुर्बानी' नीलकंठ प्रकाशन, १/१०७९ ई. महरौली, नई दिल्ली-११००३०, एस.एन.प्रिंटर्स,नवीन शाहदरा, दिल्ली - ११००३२.